

संपादकीय

अब कसेगी नकेल

सरकार ने पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट, 2024 लागू कर दिया है। इस एंटी-पेपर लीक कानून के तहत पेपर लीक या उत्तर-पुस्तिका से छेड़छाड़ करने पर कम से कम तीन साल की सजा होगी जिसे दस लाख तक के जुर्माने के साथ बढ़ा कर पांच साल तक भी किया जा सकता है। राष्ट्रपति द्वापरी मुर्मू चार महीने पहले ही लोक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) विधेयक, 2024 को मंजूरी दे चुकी थी। इस कानून का उद्देश्य यूपीएससी, एसएससी, रेलवे, बैंकिंग भर्ती परीक्षाओं और एनटीए द्वारा आयोजित अन्य तमाम परीक्षाओं में अनुचित साधनों के प्रयोग को रोकना है।

इस तरह के संगठित अपराध में शामिल लोगों पर अब न्यूनतम एक करोड़ रुपये के जुर्माने का प्रावधान है। इस कानून से पहले राज्यों में नकल रोकने और परीक्षा में किसी भी तहत की धांधली को रोकने संबंधी कानून बनाए गए हैं। ओडिशा, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात और उत्तराखण्ड में ऐसे कानून हैं। हालांकि ये उस तरह के नीतीजे देने में असफल रहे हैं, जिनके बलबूते परीक्षाओं को पारदर्शी बनाया जा सके। इस नये कानून द्वारा परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था के प्रमुख और सदस्यों को लोक सेवक माना जाएगा ताकि उनके खिलाफ अपराध के साथ ही भ्रात्याचार का मामला भी चलाया जा सके। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं पर उत्तरने वाली उंगलियों के कारण युवाओं का भरोसा लगातार टूट रहा है। बार-बार परीक्षा प्रणालियों पर संदेह और उनकी पारदर्शिता धूमिल पड़ने के चलते प्रतियोगियों में निराशा व्याप्त होती जा रही है। चर्किं अब यह संज्ञय और गैर-जमानती अपराध की श्रृंगी में आ गया है, इसलिए कोई भी पुलिस अधिकारी बोर्ड वार्ट भी अपराधी को गिरफ्तार कर सकता है।

भले ही यह फैसला लेने में सरकार ने काफी डिलाई बरती है लेकिन देर आयद दुरुस्त आयद क्योंकि उच्च शिक्षा या नौकरी के लिए परीक्षाओं का समूचा भविष्य ही दोब पर लगा होता है। परीक्षाओं में धांधली होनहार युवाओं को नैतिक तौर पर बुरी तरह तोड़ देती है। हालांकि सख्त कानून बनाने में वक्त लगता है। विशेषज्ञों की गया और विभिन्न दृष्टिकोणों से इसे सख्ती से लागू किया गया ताकि भविष्य में इस तरह का कोई संकट ही न खड़ा हो सके। साथ ही, इस तरह के अपराधियों पर लगाम कसी जा सके। देखा जाना है कि कानून सख्त किए जाने के बाद पेपर लीक और परीक्षाओं में धांधलियों पर नकेल कसने में हम किसने सफल होते हैं।

जीएसटी ने राहत

जीएसटी परिषद की बैठक में शनिवार को कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मोदी सरकार के तीसरी बार सत्ता में आने के बाद जीएसटी परिषद की इस पहली बैठक में रेलवे प्लेटफार्म टिकट, विश्राम कक्ष और प्रतीक्षालय सुविधाओं को जीएसटी मुक्त करने के महत्वपूर्ण फैसले के साथ ही सभी तरह के दूध के डिब्बों पर 12 फीसद की एक समान जीएसटी दर रखने का प्रस्ताव किया गया। बैठक के बाद प्रेस कॉर्नफ्रेस को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि अनुपालन बोडी कम करने और करदाताओं को राहत देने की गरज से भी कई सिफारिश की गई। कोशिश है कि कारोबारी सुगमता के लिए व्यवसायों के लिए प्रक्रियात्मक जटिलताएं कम की जाएं।

परिषद ने जीएसटी पंजीकरण आवेदकों के लिए बायोमीट्रिक-आधारित आधार प्रमाणीकरण के चरणबद्ध रोलआउट की सिफारिश की है। वित्त वर्ष 2017-18, 2018-19 तथा 2019-20 के लिए जीएसटी अधिनियम की धारा 73 के तहत जारी रिमॉड नोटिस पर व्याज जुर्माना मापी की भी सिफारिश है। यह धारा उन मामलों से संबंधित है जिनमें धोखाधड़ी, दमन या गलतवायानी शामिल नहीं हैं। जो करदाता 31 मार्च, 2025 तक नोटिस में मांगी गई पूरी कर राशि का भुगतान करते हैं, उन्हें इस छठ से लाभ होगा। किसी चालान या डिब्बे नोट पर इनपुट टैक्स केंडिट (आईटीसी) का लाभ लेने संबंधी मंजूरी भी दी जा रही है। छोटे करदाताओं को भी इस रूप में राहत मिलने वाली है कि वित्त वर्ष 2024-25 और उसके बाद के वर्षों के लिए रिटर्न दाखिल करने की समय सीमा 20 अप्रैल से बढ़ा कर 30 जून की जाएगी।

परिषद ने स्पष्ट किया है कि सभी प्रकार के स्प्रिंकलर पर 12 फीसद की एक समान जीएसटी दर लागू होगी। दूध के सभी डिब्बों पर उनकी सामग्री (स्टील, लोहा, एल्यूमीनियम) की परवाह किए बिना एक समान दर 12 फीसद की सिफारिश की गई है। हिमाचल और जम्मू-कश्मीर के सेव उत्पादकों की अरसे से मांग को ध्यान में रखते हुए सभी प्रकार के कार्टन बक्सों और नालीदार व गैर-नालीदार कागज या पेपरबोर्ड, दोनों से बने उत्पादों के लिए 12 फीसद जीएसटी का प्रस्ताव है। वित्त मंत्री ने पेट्रोल व डीजल को जीएसटी के तहत लाने की सरकार की मंथा भी दोहराई। दरअसल, सिफारिशों में कारोबारी सुगमता को ध्यान में रखा गया है।

मुह्या : वैश्वक गर्मी का चरम

इस बार वैश्वक गर्मी चरम पर है। विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ) के अनुसार बीते वर्ष और पिछले दशक ने धरती पर आग बरसाने का काम किया है। अमेरिका की पर्यावरण संस्था वैश्वक विटनेस और कोलंबिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में पाया है कि तेल और गैस के अधिकतम मात्रा में उत्पादन से ये हालात पैदा हुए हैं। यदि इन इधनों के उत्पादन का यही हाल रहा तो 2050 तक गर्मी चरम पर होगी।

गर्मी से जीव-जगत की बचा स्थिति होगी? अनुमान लगाना भी मुश्किल है। बढ़ते वैश्वक तापमान और जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपादाओं की संख्या और तीव्रता में निरंतर बढ़ती हो रही है। इसीले कहा जा रहा है कि धरती पर पलय बढ़ से नहीं, आसमान से बरसती आग से आएगी। धरती के जीव-जगत पर करीब तीन दशक से जलवायु परिवर्तन के वर्तमान और भविष्य में होने वाले संकटों की तलावर लटकी हुई है। संकट से निपटने के उपायों को तलाशने के लिए 198 देश लगायु सम्मेलन करते हैं। इन सम्मेलनों का प्रमुख लक्ष्य रहा है कि दुनिया की नवीनीकरण योग्य ऊर्जा को बढ़ाकर तीन गुना करने के प्रयास में जुटे हैं। इसके अंतर्गत अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत नहीं लगता कि कार्बन उत्पादन पर नियंत्रण के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को जो बढ़ावा दिया जा रहा है, वह स्थिर रह पाएगा क्योंकि जिन देशों ने वचनबद्धता निभाते हुए कोयला से ऊर्जा उत्पादन के लिए उत्पादन का असर नहीं होता है।

इस मानव निर्मित वैश्वक आपादा से निपटने के लिए, अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन, जिससे बढ़ते 1.5 डिग्री से लेकिन लंबे समय से चल रहे रूस और यूक्रेन तथा इस्ट्राइल और फिलिस्तीन युद्ध के चलते नहीं लगता कि कार्बन उत्पादन पर नियंत्रण के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को जो बढ़ावा दिया जा रहा है।

इस मानव निर्मित वैश्वक



में तापमान 52.9 डिग्री तक पहुंच चुका है। सऊदी अरब में भीषण गर्मी के चलते 1000 से ज्यादा हज यात्रियों की मौत हुई है।

इस कदर गर्मी का अनुमान पर्यावरणविद ने पहले से लगा लिया था। इनकी सलाह पर 100 से ज्यादा देश 2030 तक दुनिया की नवीनीकरण योग्य ऊर्जा को बढ़ाकर तीन गुना करने के प्रयास में जुटे हैं। इसके अंतर्गत अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत सूर्य, हवा और पानी से विज्ञान बनाने के उपाय सुझाए गए हैं।

नवम्बर, 2021 में ग्लासगो वैश्वक सम्मेलन में तय हुआ था कि 2030 तक विकसित देश और 2040 तक विकासशील देश ऊर्जा उत्पादन में कोयले का प्रयोग बंद कर दें थे, उनमें से कई रूस ने चालू कर दिए हैं।

इस मानव निर्मित वैश्वक आपादा से निपटने के लिए, अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन, जिससे कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (सीओपी/कॉप) के नाम से भी जाना जाता है, में परिस समझौते के तहत वायुमंडल का तापमान 40 से ऊपरी गर्मी का उत्पादन रोकने का लिए जारी करने के लिए 1.5 डिग्री से लेकिन लंबे समय से चल रहे हैं।

इस मानव निर्मित वैश्वक आपादा के लिए 1.5 डिग्री से लेकिन लंबे समय से चल रहे हैं। इसके अंतर्गत अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत सूर्य, हवा और पानी से विज्ञान बनाने के उपाय सुझाए गए हैं।

कटाई से क्षेत्र की पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तापमान में वृद्धि जारी रहेगी, बारिश का पैटर्न भी बद्धित होगा और हवा और भी जरूरी रहेगी। किसी के बहकावे में जा आए। अपनी जिजी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उत्पादन की आधार के रूप में लिया जाता है।

विज्ञान की हालत बदलते ही वैश्वक आपादा की धरती पर नियंत्रण की जांच शुरू होती है। इसके लिए 1.5 डिग्री से लेकिन लंबे समय से चल रहे हैं। इसके अंतर्गत अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत सूर्य, हवा और पानी से विज्ञान बनाने की धरती पर नियंत्रण की जांच शुरू होती है।

वैश्वक आपादा की धरती पर नियंत्रण की जांच शुरू होती है। इसके अंतर्गत अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत सूर्य, हवा और पानी से विज्ञान बनाने की धरती पर नियंत्रण की जांच शुरू होती है। इसके अंतर्गत अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत सूर्य, हवा और पानी से विज्ञान बनाने की धरती पर नियंत्रण की जांच शुरू होती है।

वैश्वक आपादा क

डिग्री और डिप्लोमा
होने के बावजूदआत्मविश्वास के साथ
दिखाएं कौशल

डिग्री और डिप्लोमा होने के बावजूद कई बार हमें अपनी प्रतिभा के अनुकूल नौकरी नहीं मिल पाती।

इसकी एक वजह है इंटरपर्सनल स्किल्स में पीछे रह जाना। कामयाब बनाने वाले इस गुण को अपने में कैसे विकसित किया जाए, बता रहे हैं

लोगों से बात करने में असहज होना और आत्मविश्वास के साथ अपनी योग्यताओं के बारे में न बता पाना इसी का नीतीजा होता है। हावड़ यूनिवर्सिटी के एक सर्वे में कहा गया है कि प्रोफेशनल लोगों की 85 प्रतिशत सफलता उन्निस पर निर्भर करती है।

क्या हैं इंटरपर्सनल स्किल्स

इन स्किल्स के जरिए हम व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से मेल-जोल बढ़ाते हैं, अपने भाव व्यक्त करते हैं और दूसरों के भाव समझते हैं। इन स्किल्स की जरूरत हमें निजी और व्यावसायिक, दोनों स्तरों पर होती है। इंटरपर्सनल स्किल्स बेहतर की लोक होना बेहतर होनी चाही है। साथ ही इन्हें व्यवहार में भी लाना जरूरी है। 'सबसे इज ए स्टेट ऑफ माइंड' के लेखक प्रवीण वर्मा का कहना है कि सफलता के कुछ नियम होते हैं और किसी भी व्यवसाय में बने रहने के लिए जरूरी है कि सीखने की इच्छा को जिंदा रखा जाए।'

ट्रेनिंग है महत्वपूर्ण

अमेरिका में पिछले साल हुए एक सर्वे में बड़ी संख्या में पेशेवर लोगों ने प्रमोशन पाने के लिए इंटरपर्सनल स्किल को सबसे महत्वपूर्ण बताया। इन स्किल्स को महज किताबें पढ़कर नहीं सीखा जा सकता। हालांकि प्रोफेशनल ट्रेनिंग से इसमें काफी मदद मिल सकती है। ये स्किल्स विकसित करने के लिए आपके अंदर सीखने की लालक होना बेहतर होती है। साथ ही इन्हें व्यवहार में भी लाना जरूरी है। 'सबसे इज ए स्टेट ऑफ माइंड' के लेखक प्रवीण वर्मा का कहना है कि सफलता के कुछ नियम होते हैं और किसी भी व्यवसाय में बने रहने के लिए जरूरी है कि सीखने की इच्छा को जिंदा रखा जाए।'

लाभ उठाएं अवसरों का

नेशनल स्किल्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 तक देश के 24 अहम कार्यक्षेत्रों में कीरब 12 कोरेड नए कुशल लोगों की जरूरत होगी। देश में हर साल कीरब सबा कोरेड लोग रोजगार तलाश रहे हैं और इनमें से बड़ी संख्या ऐसे नौजानों की है, जिन्हें कोई ऑपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। एक आंकड़े के मुताबिक देश में इस समय सालाना सिर्फ 35 लाख लोगों के लिए स्किल ट्रेनिंग का इंतजाम है, जबकि चीन में हर साल नी कोरेड लोग हुनर्मंद बनने के लिए स्किल इंडिया जैसा प्रोजेक्ट लांच किया है। इस प्रोजेक्ट के तहत 2022 तक 40 कोरेड से ज्यादा लोगों को हुनर्मंद बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

इंटरपर्सनल स्किल्स के दुरुमन

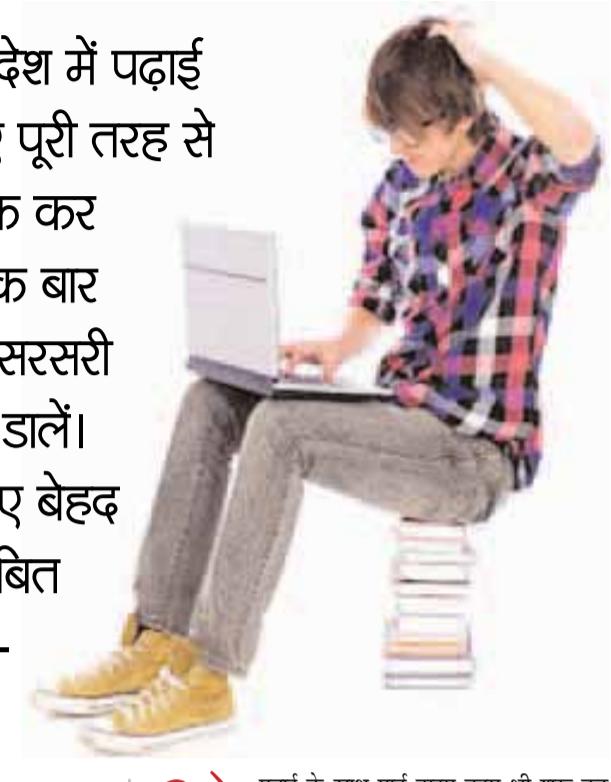
- लक्ष्य तय न करना
- खुद को औरें से कमज़ोर आंकना
- खुद को अपडेट न रखना
- योजना बनाकर काम न करना
- समय का सही प्रबंधन न करना
- आत्मविश्वास की कमी
- ओपेशन और ज्यादा मुहावरेदार भाषा का इस्तेमाल
- बातचीत में दिलचस्पी न पैदा कर पाना
- पिछली गलतियों से सबक न लेना

कुछ प्रमुख स्किल्स

- नेतृत्व में कुशलता
- प्रस्तुतीकरण का हुनर
- दूसरों को सुनने का धैर्य
- टीम मैनेजमेंट
- प्रेरित रहने का हुनर
- मध्यस्थता की कुशलता
- स्ट्रेस मैनेजमेंट
- डाइम मैनेजमेंट

विदेश में पढ़ाई करने से पहले रखें इन 5 बातों का ख्याल

अगर आप विदेश में पढ़ाई करने के लिए पूरी तरह से अपने बैग पैक कर चुके हैं तो एक बार इन बातों पर सरसरी निगाह जरूर डालें। जो आपके लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकती है -



3) पढ़ाई के साथ पार्ट टाइम काम भी शुरू कर दें। यह आपको पॉकेट मनी दिलाने के साथ लोगों से बुलने-मिलने का अवसर भी देता है।

4) नई जगह पहुंचकर जिर्ब रहने से अच्छा है वहां के लोगों से मिलेंगे और दोस्त बनाएं। यह तरीका दूसरे शहर में अपनों के दूर रहने की कमी को पूरा करने के साथ सामाजिक बनाता है।

5) घर से दूर दूसरे देश में रहने के दौरान किसी भी तरह की समस्या अनें पर अपना सेल्फ-कॉफेंट नहीं खाने दें। यह आपको हर मोड़ पर सोर्टर करेगा।

युवाओं के करियर में पेरेंट्स की भूमिका

आज के युवा अपने निर्णय खुद लेने में विश्वास करते हैं। अक्सर वे अपने निर्णयों में माता-पिता को शामिल नहीं करते। घूमने के लिए बाहर जाने से लेकर बात चाहें तक वे अपने घर के बरिष्ठ लोगों से सलाह लेते हैं।

से कोई भी जानकारी का असानी से जुड़ा जाती है। युवाओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुभव सबसे बड़ी चीज़ है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आये। वे जो भी रसायन दिखाएं वह सही होती है। अनुभ

